छत्तीस कुलीन पंवार (पोवार) समाज का गौरवशाली इतिहास और पहचान

पंवार (पोवार) समाज का इतिहास अत्यंत गौरवशाली रहा है। समाज के राजाओं ने इतने उत्कृष्ट कार्य किए कि यह कहा जाने लगा कि पृथ्वी की शोभा पंवारों से है। पंवार समाज ही एकमात्र ऐसा समुदाय है जो प्राचीन छत्तीस कुलों के क्षत्रिय संघ का प्रतिनिधित्व करता है, जिसका उल्लेख गौरवशाली इतिहास में मिलता है। इन कुलों से कई राजवंश उत्पन्न हुए, जिन्होंने अखंड भारत के कोने-कोने में शासन किया। पौर राजवंश से लेकर अवंती और मध्य भारत तक छत्तीस क्षत्रिय कुलों का इतिहास प्रत्येक स्थान पर देखने को मिलता है।

मालवा क्षेत्र के इन्हीं छत्तीस कुलीन पंवार राजाओं में सम्राट विक्रमादित्य भी हुए, जिनके नाम की उपाधि कई राजाओं ने गर्व से धारण की। मध्यकालीन इतिहास में इस समाज से परमार वंशी राजा हुए, जिनमें राजा मुंज, राजा सिंहराज, राजा भोजदेव, उदयादित्य, जगदेव और विदर्भ नरेश लक्ष्मणदेव पंवार

प्रमुख थे। जब संपूर्ण भारत मुस्लिम आक्रमणकारियों के आतंक से जूझ रहा था, तब पंवार समाज ने अठारहवीं सदी की शुरुआत में मध्य भारत के राजाओं के सहयोग के लिए कदम बढ़ाया। मराठा और गोंड राजाओं के साथ मिलकर इस छत्तीस कुलीन क्षत्रिय सेना, जिसे पंवार सेना भी कहा जाता था, ने 1702 में मुगल शासक औरंगजेब की सेना को खदेड़कर नागपुर राज्य की स्थापना में सहयोग किया। इसी सेना की सहायता से भोंसले राजाओं ने विशाल साम्राज्य स्थापित किया।

इतनी गौरवशाली विरासत के उत्तराधिकारी छत्तीस कुलीन पंवार राजपूत समाज को आज आवश्यकता है कि वह चौमुखी विकास करे, देश की एकता और अखंडता में अपना योगदान दे और समाज को एकजुट करके आगे बढ़ाए। किंतु यह भी आवश्यक है कि यह विकास समाज की गौरवशाली विरासत, संस्कृति, नाम और पहचान को संरक्षित रखते हुए हो। हाल के वर्षों में कुछ व्यक्तियों और संस्थाओं ने समाज की पहचान को नष्ट करने का प्रयास किया। बाहरी तत्वों को बढ़ावा देने के लिए समाज और संस्थाओं के नाम बदले गए और इतिहास को भी मनगढ़ंत आधार पर विकृत करने का षड्यंत्र रचा गया।

समाज के वैवाहिक नियमों को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया गया, जिससे युवाओं में भ्रम फैला और उन्हें समाज के सही इतिहास व सामाजिक नियमों की जानकारी नहीं मिल पाई। अभिभावकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने बच्चों को इतिहास तथा प्राचीन सामाजिक विधि-विधान से परिचित कराएँ, किंतु ऐसा नहीं हुआ। पिछले पाँच वर्षों में यह देखने को मिला कि लोग अपने प्राचीन नामों को छोड़कर

अन्य समाजों के आधार पर नए नामों को अपनाने लगे और समाज की पहचान को विकृत कर गलत तथ्यों का प्रचार किया गया। इसमें तथाकथित बड़ी संस्थाएँ भी शामिल थीं।

छत्तीस कुलीन पंवार समाज की सर्वोच्च संस्था "अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ" ने इन विकृतियों के विरुद्ध कार्य किया और समाज के वास्तविक इतिहास, संस्कृति तथा पोवारी (पंवारी) भाषा को बचाने का उल्लेखनीय कार्य किया। इस संस्था ने न केवल मनगढ़ंत इतिहास लिखने वालों का विरोध किया, बल्कि साक्ष्यों के साथ प्राचीन इतिहास को पुनः समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। आज जो भी संस्थाएँ स्वयं को पंवार या छत्तीस कुलीन पंवार समाज का हितैषी मानती हैं, उन्हें सबसे पहले अपने सही नाम को धारण करना चाहिए।

अब वह समय समाप्त हो चुका है जब कुछ स्वार्थी लोग अपभ्रंशित नामों से समाज को गुमराह कर गलत इतिहास लिखकर महिमा और पुरस्कार प्राप्त कर रहे थे, लेकिन समाज के नाम को ऊँचा उठाने की बजाय उसे नीचे गिरा रहे थे। समाज के मूल नाम "पंवार" की बिंदी हटाकर इसे विकृत करने का दुस्साहस किया गया, जो आज भी दिखाई देता है। इसे तत्काल रोके जाने की आवश्यकता है। समाज के समक्ष सही इतिहास प्रस्तुत करना अनिवार्य है। नागपुर में जिस प्रकार समाज के इतिहास और नामों को बदला गया, उसे सुधारने की आवश्यकता है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपने वास्तविक इतिहास से अवगत हो सकें, जिसे हमारे पूर्वजों ने कठिन परिस्थितियों में भी सुरक्षित रखा था।

यह गौरवशाली इतिहास आने वाली पीढ़ियों को और अधिक उन्नति की प्रेरणा देगा। यह प्रेरणा देगा कि हमारे पूर्वजों ने बिना अपनी पहचान खोए, अपनी संस्कृति को बनाए रखते हुए सभी समाजों के साथ सहयोग किया और सनातन धर्म की रक्षा में योगदान दिया। जहाँ भी गए, वहाँ अपनी संस्कृति के अनुरूप भगवान श्रीराम के मंदिरों का निर्माण किया, ताकि समाज सांस्कृतिक रूप से सशक्त बना रहे। स्व. लखाराम जी तूरकर ने छत्तीस कुलीन पंवार समाज के सर्वांगीण विकास के लिए "पंवार धर्मोपदेश" दिया, जिसमें समाज की परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित रखते हुए उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने की बात कही गई थी।

आज छत्तीस कुल पंवार संघ को कार्य करते हुए 325 वर्ष पूरे हो चुके हैं। यही 325 वर्ष पुरानी संस्था, नए नाम के साथ "अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ", जो छत्तीस कुलीन पंवारों के पूर्वजों द्वारा स्थापित सभी प्राचीन संस्थाओं को संरक्षित रखते हुए, समाज के वास्तविक हितों के लिए कार्य कर रही है। यह संस्था समाज के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करेगी, बिना अपनी संस्कृति, पहचान और नाम को मिटाए, अपनी पहचान को गर्व से कायम रखते हुए 325 वर्षों की परंपरा को आने वाली पीढ़ियों को सौंपेगी।

पोवारी (पंवारी) भाषा ही पंवार समाज की असली भाषा है। समाज के केवल छत्तीस कुल ही अनादिकाल से माने गए हैं, और समाज की कभी कोई शाखा नहीं रही। यह परंपरा समाज किसी के

बहकावे में आकर नहीं छोड़ सकता। झूठे और नकली इतिहास तथा स्वार्थी, पदलोलुप लोगों के षड्यंत्र से सत्य और समाज की छत्तीस कुलीन संरचना को बदला नहीं जा सकता। समाज का नाम और गरिमा मिटाने वाले कभी सफल नहीं होंगे, क्योंकि पंवार समाज का इतिहास गौरवशाली है और हमारे पूर्वजों ने संघर्ष किया, परंतु अपने नाम और पहचान को न तो कभी बदला और न ही कभी झुके।

आज जो भी संस्थाएँ असली पंवारों के हितैषी हैं, उन्हें इस परंपरा को जारी रखना चाहिए और पंवार समाज को ऐसे ऊँचे मुकाम पर ले जाना चाहिए, जहाँ हमारी गौरवशाली संस्कृति भी संरक्षित रहे और साथ में समाज हर क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सके।

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार(पंवार) महासंघ